



“हरिशंकर परसाई के व्यंग्य निबंधों में राजनीतिक विडंबना और सामाजिक प्रभाव : ‘ठिठुरता हुआ गणतंत्र’, ‘कर कमल हो जाए’ एवं ‘हम बिहार में चुनाव लड़ रहे हैं’ के संदर्भ में”

लेखिका : कोमल जवळकर

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा

धारवाड ,कर्नाटक

हरिशंकर परसाई जी एक प्रसिद्ध व्यंगकार हैं। उनके व्यंग्य लेखन ने हिन्दी साहित्य को एक नयी दिशा दी है, उन्होंने सामाजिक मुद्दों को अपने लेखन का विषय बनाकर आम जनता की समस्या उनके उपर होने वाले अत्याचार पर प्रकाश डाला है। उनके द्वारा लिखित किताब ठिठुरता हुआ गणतंत्र में भी समाज के अलग-अलग विसंगतियों के बारे में हमें अवगत करानी की कोशीश की है।

हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित ठिठुरता हुआ गणतंत्र इस निबंध की शुरुआत दिल्ली में होने वाले गणतंत्र दिवस से होती है। वैसे तो गणतंत्र दिवस पूरे देश में ही धूमधाम से मनाया जाता है, परंतु राजधानी दिल्ली में इस दिन भव्य परेड का आयोजन किया जाता है। यह अनोखा जलसा देखने के लिए हरिशंकर परसाई जी चार-बार जा चुके हैं। लेकिन पाँचवीं बार देखने की उनमें हिम्मत नहीं थी। क्योंकि हर समय इस गणतंत्र के दिवस पर मौसम बहुत ही क्रूर रहता है। शीत लहर का चलना, बर्फ गिरना, सूर्य का बादलों में छिपने का प्राकृतिक खेल शुरू रहता है।

इस गणतंत्र के उत्सव पर लेखक कांग्रेस के एक नेता से पूछते हैं कि, क्या बात है कि हर बार गणतंत्र दिवस पर सूर्य छिपा रहता है। इस पर वह नेता कहता है कि थोड़ा धीरज रखिए, वह कोशिश कर रहे हैं। इतने बड़े सूर्य को बाहर निकालना इतना आसान नहीं है। यही प्रश्न परसाई जी, विरोधी पार्टी के सदस्य से, संसोपा भाई से भी पूछते हैं। तब वह कहते हैं कि, उन्हें अगर प्रधानमंत्री बनने का मौका मिले तो सूर्य क्या, उसके अच्छे भी निकल पड़ेंगे। जनसंघी भाई तो सीधे सरकार पर आरोप लगा रहे हैं कि, इनसे कुछ नहीं होगा।

लेखक कहते हैं कि, गणतंत्र-समारोह पर हर राज्य की झाँकी निकलती है। ‘सत्यमेव जयते’ हमारा मोटो है मगर झाँकियाँ झूठ बोलती हैं। असल में हर राज्य को उस विशिष्ट बात को यहाँ प्रदर्शित करना चाहिए, जिसके कारण पिछले साल वह राज्य मशहूर हुआ। गुजरात की झाँकी में दंगे का दृश्य होना चाहिए। आंध्र की झाँकी में हरिजन जलाते दिखाई देना चाहिए। मध्य प्रदेश की झाँकी में घपले का दृश्य होना चाहिए। अंत में लेखक कहते हैं कि, अगर समाजवाद जनता के द्वार से नहीं बल्कि दफ्तरों के द्वार से आ गया तो यह एक ऐतिहासिक घटना हो जाएगी।

इस व्यंग्य निबंध के माध्यम से लेखक कहना चाहते हैं कि, जितना विकास आज देश का होना चाहिए उतना विकास नहीं हो पाया है। हर कोई नेता विकास लाने की बात तो करता है, लेकिन वास्तविकता में वह कुछ नहीं कर रहा है। हर एक पार्टी का उम्मीदवार चुनाव जीतने की होड़ में लगा हुआ है। देश के विकास के बारे में अगर पूछा जाए तो उन्हें सौ साल की मोहलत चाहिए। यहाँ पर सूर्य का छिपना यही दर्शाता है कि, विकास अभी तक नहीं हुआ है।

हर एक राज्य में दंगे-फसाद, जाति-भेद, धर्म-भेद तथा भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। हर साल समाजवाद की घोषणा की जाती है, लेकिन वह नहीं आ रहा है। अगर नेतागण वोट मांगने के बजाय देश के लिए कुछ करके दिखाएँगे तो वह एक ऐतिहासिक घटना हो सकती है, ऐसे लेखक कहते हैं। इस निबंध में जनता के गरीबी पर भी प्रकाश डाला गया है। जहाँ पर आम जनता अपनी प्राथमिक जरूरत भी नहीं पूरी कर पा रही हैं। यहाँ नेताओं की दोगलेपन मानसिकता पर निशाना साधा है।

‘कर कमल हो जाए’ इस निबंध में लेखक को किसी उद्घाटन समारोह में बुलाया गया था। लेखक को तीन कॉलेजों से निमंत्रण पत्र आया था। जहाँ पर उद्घाटन लेखक के कर कमल से होगा। लेखक आकाशवाणी में काम करते हैं। वह अहिंसावादी विचारधारा के व्यक्ति हैं। गांधीजी के रास्ते पर चलने वाले व्यक्ति हैं। लेखक के एक दोस्त थे, जिनको भी उद्घाटन समारोह में शामिल होने का निमंत्रण आया था। वह लेखक से कुछ बेहतर क्वालिटी के थे। क्योंकि उन्होंने पाँच उद्घाटन पहले से ही की हुई हैं। अगर कोई व्यक्ति उद्घाटन समारोह में जाता है तो उसे भाषण देना जरूरी होता है। भाषण के समय उनकी स्थिति बहुत ही दयनीय हो जाती है। क्योंकि वहाँ पर मौजूद लड़के चिल्लाते हैं कि, “भाषण नहीं, नौकरी दो।”

अभी यह लोग कॉलेजों में जाने से डर रहे हैं। क्योंकि कहीं जूते न पड़ जाएँ। एक व्यक्ति का अखबार में चित्र आया था, जो पंद्रह सालों से उद्घाटन समारोह में शामिल हो रहे थे। जब वह एक विश्वविद्यालय में अच्छी-अच्छी बातें करने के लिए गए तो वहाँ वह पिट गए। आजकल अच्छी बातें कहने वाले लोग ज्यादा पीट रहे हैं। इसलिए आजकल इन कमलों को पुलिस सुरक्षा प्रदान कर रही है। कुछ लोग अपने भाषण को सफल बनाने के लिए जेब से मिट्टी की पुड़ियाँ निकाल कर वह कपाल पर लगा कर लोगों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। और जिस भी स्थान पर भाषण करने जाते हैं, वहाँ पर यह पोटली निकाल कर ही बात करते हैं। और खुद को बुद्धिजीवी कहते हैं।

इस व्यंग्य निबंध में परसाई जी ने बेरोजगारी समस्या को उजागर किया है। आजकल खुद को बुद्धिजीवी कहलवाने वाले लोग खुद को शेर समझते हैं। पर वे सियारों की बारात में बैंड बजाते हैं।

“हम बिहार में चुनाव लड़ रहे हैं” इस व्यंग्य निबंध में लेखक राजनीति में उतर गए हैं। अब उनका नाम बाबू हरिशंकर नारायण प्रसाद सिंह हैं। वह बिहार की जनता की पुकार पर ही बिहार आए हैं। जनता की पुकार राजनीतिज्ञों को कैसे सुनाई देती है, यह एक रहस्य है इस धंधे का। जनता की पुकार कभी-कभी मेमने की पुकार की तरह होती है। वह पुकारता है अपनी माँ को, और आ जाता है भेड़िया।

बिहार के लोगों की पुकार पर बस लेखक ही नहीं, बल्कि श्रीकृष्ण भी बिहार पहुँच चुके थे, जनता के उद्धार के लिए। जब लेखक उन्हें पूछते हैं कि, आप श्रीकृष्ण हैं ना, तब वह कहते हैं कि, अब वह भगवान बाबू कृष्णनारायण प्रसाद सिंह हैं। इस पर लेखक कहते हैं कि, क्या आप गोरक्षा-आंदोलन का नेतृत्व करने पधारे हैं? तो उनका कहना था कि, ऐसे छोटे चुनाव में वे रुचि नहीं रखते हैं। कृष्णवल्लभ भी बिहार में चुनाव लड़ने आए हैं।

कृष्णबाबू जी से जब लेखक पूछते हैं कि, आपका इरादा क्या है? तब वह कहते हैं कि, वह त्रिसूत्री की स्थापना करेंगे। यहाँ पर सुदर्शन चक्र चलाने की बात भी करते हैं। लेखक कृष्णबाबू को सलाह देते हैं कि, आप राज्य के मुख्यमंत्री बन जाइए और अपनी पत्नी रुक्मिणी को भी बुला लीजिए। लेखक का कृष्ण को चुनाव में उतारने के पीछे कारण यह है कि,

वह राजनीति में नए-नए आए हैं। पहले वह किसी बड़ी हस्ती का चमचा बनेंगे। दादा को चमचा चाहिए और चमचे को दादा। कभी सोचते हैं कि, शंकराचार्य को भी अपनी तरफ कर लूँ।

कुछ राजनीतिक लोग कृष्ण की जाति के बारे में पूछते हैं। क्योंकि कुछ लोग अपनी जाति के उम्मीदवारों को ही वोट देते हैं। जब सब उम्मीदवारों को पता चला कि कृष्णबाबू चुनाव लड़ रहे हैं, तो सभी उनका इतिहास खोजना शुरू कर देते हैं और चरित्र हनन करने लगे। जब कृष्ण पुजारी को पूछते हैं कि, वह किसे वोट देंगे? तब वह कहते हैं कि, भगवान आपको वोट की क्या कमी है। चुनाव में जीतने के लिए कृष्णबाबू और लेखक कांग्रेस दफ्तर चले जाते हैं। वहाँ पर पता चला कि कांग्रेस अब सरकार नहीं बनाती। सरकार गिराती है। वह संसोध के पास चले जाते हैं। जनसंघ के पास गए, उनको यह समझ में आया कि, किसी से भी उनका काम नहीं होगा। उन्हें अब नई पार्टी ही तैयार करनी पड़ेगी।

इस व्यंग्य निबंध के माध्यम से हरिशंकर परसाई जी ने बिहार में होने वाले चुनाव, चुनाव में जीतने के लिए बंदूक का सहारा लेना, सांप्रदायिक दंगे, परिवार के सदस्यों को राजनीति में ढकेलना, विरोधी पार्टी को हराने के लिए नए-नए हथकंडे को अपनाना, लोगों को बंदूक की धाक पर उनके वोट्स बटोरना और जनता की रोजी-रोटी समस्या के बारे में न सोचना, बस अपनी सरकार में बने रहने के बारे में सोचना, इस विचारधारा पर हरिशंकर जी ने व्यंग्य किया है।

२०१८ में प्रकाशित इस संस्करण में संकलित हरिशंकर परसाई के व्यंग्य-निबंधों की राजनीतिक एवं सामाजिक प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। इन रचनाओं में व्यक्त राजनीतिक विडंबनाएँ, सत्ता की मानसिकता, चुनावी अवसरवाद, बेरोजगारी तथा आम जनता की समस्याएँ वर्तमान संदर्भ में भी विचारणीय प्रतीत होती हैं।